<u>हिन्दी कार्यशाला रिपोर्ट / Hindi Workshop Report</u>

दिनांक 19/06/2023

हिन्दी कार्यशाला विषय :- 1) प्रदूषण की रोकथाम हेतु प्राचीन भारत की परम्पराओं का वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य
2) राजभाषा में कार्यालयीन कार्य एवं नवाचार की आवश्यकता

राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, भोपाल (एन.आई.टी.टीटी.आर) में राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में दिनांक 19.06.2023 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया| इस कार्यशाला में विषय विशेषज्ञ के रूप में डॉ. दुर्गादत्त ओझा जी को आमंत्रित किया गया था। डॉ. ओझाजी जाने माने वैज्ञानिक एवं भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों की हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य भी हैं| इस कार्यशाला में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भोपाल (नराकास) के सदस्य संस्थानो से नामित प्रतिभागी व एन.आई.टी.टीटी.आर के निदेशक महोदय भी उपस्थित थे, अधोहस्ताक्षरी को भी इस कार्यशाला के लिए संस्थान प्रमुख द्वारा नामांकित किया गया था। इस कार्यशाला का संचालन नराकास भोपाल की सदस्य सचिव श्रीमती शोभा लेखवानी द्वारा किया गया।

इस कार्यशाला में निम्नलिखित दो विषयों पर विषय विशेषज्ञ द्वारा व्याख्यान दिया गया:

1. **<u>प्रदूषण की रोकथाम हेतु प्राचीन भारत की परम्पराओं का वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य</u>**: इस विषय पर पर्यावरण और उसके प्रकार से चर्चा शुरू हुई और कैसे पर्यावरण संरक्षण के पहलुओं को प्राचीन भारत से अपनाया गया था उसपर चर्चा आगे बढ़ी, जैसे कि पशुओं का संरक्षण, हवन-यज्ञ आदि, पशुओं के संरक्षण के उदाहरण स्वरूप :-, मां सरस्वती का वाहन हंस, शिव जी का वाहन नंदी बैल, गणेशजी का वाहन मूषक इत्यादि, इस प्रकार पशुओं को देवी-देवताओं के वाहन का दर्जा मिला और वे पूजनीय बनकर संरक्षित किए गए। इसी प्रकार यज्ञ के महत्व पर चर्चा आगे बढ़ी, यज्ञ की परंपरा प्राचीनकाल से ही रही है, इसमें प्रयुक्त सामाग्री गाय का घी, यज्ञ के लिए लकड़ी, समीघा के भी वैज्ञानिक महत्व पर चर्चा हुई जो कि रोगनाशक होने के साथ-साथ वातावरण शुद्ध रखने में भी प्रमुख भूमिका निभाती है।

2. कार्यशाला के दूसरे भाग में **<u>राजभाषा में कार्यालयीन कार्य एवं नवाचार की आवश्यकता</u>** विषय पर व्याख्यान आगे बढ़ा और निम्नलिखित मदों पर चर्चा हुई :-

- हिन्दी भाषा की विशेषता :- हिन्दी भाषा को जैसे बोला जाता है, सुना जाता है वैसे ही लिखा जाता है, अन्य किसी भाषा में यह गुण नहीं है। उदाहरणतः अँग्रेजी के शब्द जैसे knowledge, knife, pneumonia, tsunami इत्यादि जिसमें बोला-सुना कुछ, परंतु लिखते समय वर्तनी में बदलाव आ जाता है।

- महोदय ने राजभाषा के महत्व को दर्शाने के लिए यह बताया कि प्रत्येक देश में तीन तत्व उसके सम्मान के सूचक होते हैं:

- राष्ट्रध्वज
- राष्ट्रगान
- राजभाषा

जिस प्रकार प्रत्येक देशवासी के लिए राष्ट्रध्वज एवं राष्ट्रगान सम्माननीय है उसी प्रकार राजभाषा भी देश की सम्मान-सूचक है इसीलिए राजभाषा को भी सम्मान दिया जाना चाहिए।

- हिन्दी में कार्यालयीन कार्य करने में उचित तरीके से टिप्पण लिखने के महत्व पर चर्चा हुई , जिसमें कि :-

- टिप्पण संक्षिप्त होना चाहिए।
- विषय का स्त्रोत इस टिप्पण में वर्णित होना चाहिए।
- आलोचनात्मक शब्दों का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए ।
- अपने विचार व दृष्टिकोण प्रस्ताव के रूप में प्रस्तुत किए जाने चाहिए।

- हिन्दी का प्रगामी प्रयोग बढ़ाए जाने की दृष्टि से "आज का शब्द" जैसे तरीकों का उपयोग किया जाना चाहिए, उदाहरणतः "आज का शब्द" में latin phrases जैसे की verbatim : शब्दशः , modus operandi: कार्य प्रणाली , par-exellence : सर्वोत्कृष्ट, ex-gratia: अनुग्रहपूर्वक या फिर प्रमुखतः प्रयोग में लाए जाने वाले प्रशासनिक शब्दों को सम्मिलित किया जाना चाहिए।

उक्त कार्यशाला नराकास की सदस्य सचिव श्रीमती शोभा लेखवानी के धन्यवाद ज्ञापन के साथ सम्पन्न हुई।

समता
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी,
निफ्ट भोपाल